# प्रशिक्षण शिष्यों को प्रशिक्षित करने के लिए
# सत्र 19: चेला चुनना (9ब)

रॉन लाइवली, एम.डिवी., एमए द्वारा ऑफ़र किया गया - BiblicalMentoring.org (अध्ययन)

**चरण 1**: प्रारंभिक प्रार्थना

**चरण 2**: प्रत्येक व्यक्ति स्मृति कविता को उद्धृत करता है: छंद चरण: **यूहन्ना 6:70-71**
***70 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, "क्या मैं ने तुम बारहों को नहीं चुना? और तुम में से एक शैतान है।***
***71 उस ने शमौन इस्करियोती के पुत्र यहूदा के विषय में कहा।***
***क्योंकि वह बारहों में से एक, उसे धोखा देने जा रहा था।***

**चरण 3**: *बाइबल अध्याय के सभी या कुछ हिस्सों को पढ़ें और चर्चा करें* **– जॉन 6**

***चरण 4:*** व्यक्तिगत अनुप्रयोगों और/या समूह चर्चा के लिए प्रश्न:

एक. फिलिप्स का सुझाव है कि हम प्रशिक्षित करने के लिए एक संभावित शिष्य के साथ एक पूर्व-शिष्यत्व संबंध विकसित करना शुरू करते हैं। हम सीखेंगे कि यह दो कारणों से क्यों महत्वपूर्ण है।

दो. क्या आप बता सकते हैं कि आपके प्रशिक्षु को एक स्वस्थ कार्यशील निकाय (चर्च) में क्यों शामिल होना चाहिए?

तीन. हम सीखेंगे कि एक शिष्य के लिए खुद को आध्यात्मिक रूप से खिलाना क्यों महत्वपूर्ण है। यानी अपनी आत्मा के लिए मिशनरी बनना।

चार. क्या आप व्यक्तिगत रूप से पांच विषयों का अभ्यास करते हैं: अध्ययन, याद रखना, ध्यान करना, प्रार्थना करना और पूजा करना (एसएमएमपीडब्ल्यू)?

पाँच. लेखक का कहना है कि एक अनुशासनात्मक रिश्ते में प्रतिबद्धता और समर्पण शामिल होना चाहिए। याद रखें कि एक अनुशासित रिश्ते का उद्देश्य एक ऐसे व्यक्ति को तैयार करना है जो दूसरों में मसीह जैसे चरित्र को पुन: उत्पन्न करने के लिए खुद के लिए मर चुका है।

***चरण 5:*** *पुस्तक की सामग्री पढ़ें और चर्चा करें:*
**अध्याय 9 बी लेखक के अनुसार - कीथ फिलिप्स:**

### *सावधानी से चुनें*

*यीशु ने भीड़ में से केवल कुछ ही पुरुषों को चुनकर गुणवत्ता चयन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया (लूका 6:13)। कुछ लोग जो उसके साथ रहना चाहते थे, उन्हें बताया गया था कि वे ऐसा नहीं कर सकते (लूका 8:38,39)। जो लोग अति आत्मविश्वासी थे, उनकी प्राथमिकताएँ गलत थीं या पुराने स्नेह से चिपके हुए थे, उन्हें बाहर रखा गया था (लूका 9:57-62)। कुछ व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित करके, यीशु ने स्वयं को बहुत पतला फैलाने के प्रलोभन का विरोध किया। जब आपको लगता है कि आपको एक संभावित शिष्य मिल गया है, तो उसे शिष्य बनने के लिए आमंत्रित करने से पहले उसके साथ शिष्यत्व से पहले का संबंध विकसित करें। पूर्व-शिष्यत्व एक संभावित शिष्य को प्रशिक्षित करना है कि उसे "परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कैसे जीना चाहिए" (1 थिस्सलुनीकियों 4:1 एनआईवी)। इस रिश्ते के दो फायदे हैं। यह उसे बचपन से आध्यात्मिक शैशवावस्था से बढ़ने के लिए तैयार करता है, और यह आपको उसकी प्रतिबद्धता की गहराई का आकलन करने की अनुमति देता है।*

### *शिष्यत्व पूर्व प्रशिक्षण*

*यरूशलेम में शुरू में धर्मान्तरित लोगों का पालन-पोषण "प्रेरितों की शिक्षा और संगति, रोटी तोड़ने और प्रार्थना के लिए निरंतर समर्पित करने" के द्वारा किया गया था (प्रेरितों के काम 2:42)।| सबसे पहले, आपके संभावित शिष्य को एक स्वस्थ, कार्यशील*

*शरीर में शामिल किया जाना चाहिए जहां वह दूसरों को देखकर मसीह की तरह बनना सीख सके और जहां वह उस संगति, प्रेम और जवाबदेही का अनुभव कर सके जिसकी उसे आवश्यकता है।*

*इसके अलावा, आपको उसे अपने मसीही जीवन के लिए एक ठोस आधार बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उसे अपनी "जड़ों को [मसीह] में विकसित होने देना चाहिए और उससे पोषण प्राप्त करना चाहिए ..." (कुलुस्सियों 2:7 पौंड)। इसका अर्थ यह है कि उसे नियमित रूप से बाइबल अध्ययन, पवित्रशास्त्र को याद रखने, ध्यान, प्रार्थना और आराधना के माध्यम से खुद को आध्यात्मिक रूप से खिलाने के लिए सुसज्जित होना चाहिए।*

*आपको इनमें से प्रत्येक विषय में उसके साथ मिलकर काम करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे उसके जीवन का हिस्सा बन जाएं। उसे बताएं कि उसे अध्ययन क्यों करना चाहिए, याद रखना चाहिए, ध्यान करना चाहिए, प्रार्थना करनी चाहिए और पूजा करनी चाहिए। उसे बाइबल से सिखाएं कि ये कितने महत्वपूर्ण हैं और अपने अनुभव को साझा करके उनके मूल्य को रेखांकित करें। इंगित करें कि इन विषयों का अभ्यास करना कानूनीता नहीं है, बल्कि विश्वासयोग्यता है। उसे दिखाएं कि आप उन्हें कैसे करते हैं। उसके साथ उन्हें करके उसे शुरू करें। उसे उस पर बनाए रखें। आपका उदाहरण उसे वफादार होने के लिए प्रोत्साहित करेगा। नियमित रूप से उन सिद्धांतों को साझा करें जिन्हें आपने सीखा है और लागू कर रहे हैं। उसके सवालों के जवाब देने के लिए उपलब्ध रहें। उसे असाइनमेंट और व्यावहारिक, दैनिक अनुप्रयोगों के लिए जवाबदेह ठहराएं। जब आपका छात्र आपके उकसावे के बिना इन ईसाई बुनियादी बातों में से प्रत्येक में ईमानदारी से शामिल होता है, तो आपका शिष्यत्व से पहले का रिश्ता सफल रहा है।*

***करीबी अवलोकन***

*पूर्व-शिष्यत्व आपको एक संभावित शिष्य के साथ बेहतर परिचित होने की अनुमति देता है। आप उसकी प्रेरणा, सिखाने की क्षमता और ईश्वर के प्रति प्रतिबद्धता की निगरानी कर सकते हैं और यह तय कर सकते हैं कि उसे उसके जीवन के आधार पर शिष्य बनाना है या नहीं, न कि केवल उसके शब्दों के आधार पर। यह आवश्यक है कि वह अपने जीवन में ईसाई धर्म की मूल बातें शामिल करे और शिष्यत्व संबंध शुरू करने से पहले आप उसे अच्छी तरह से जानते हों। पहला तीमुथियुस 5:22 चेतावनी देता है, "किसी पर बहुत जल्दबाजी में हाथ न डालना..."*

***पहल करें***

*यदि परमेश्वर का आत्मा आपको और आपके ऊपर अधिकार रखने वालों को पुष्टि करता है कि आपको एक अनुशासनात्मक संबंध में प्रवेश करना चाहिए, तो आपको पहल करनी चाहिए। अपश्चाताप करने वाली मानवता के लिए परमेश्वर की करुणा में, वह देहधारी हुआ और हमारे बीच रहने लगा (यूहन्ना 1:14)। परमेश्वर ने पहल की। जब मसीह ने अपनी अनुशासन सेवकाई शुरू की, तो उसने प्रत्येक शिष्य को व्यक्तिगत रूप से बुलाया (यूहन्ना 6:70)।*

***निमंत्रण जारी करें***

*अपने संभावित शिष्य को समझाएं कि बहुत प्रार्थना के बाद और अपने आध्यात्मिक अगुवों की सलाह के माध्यम से, परमेश्वर ने आपको शिष्यत्व के लिए प्रतिबद्धता बनाने के लिए आमंत्रित करने के लिए प्रेरित किया है। इंगित करें कि कैसे परमेश्वर को जानने की उसकी उत्सुकता, उसकी उपलब्धता, विनम्र आत्मा, विश्वासयोग्यता और शिष्य बनाने की दृष्टि इंगित करती है कि परमेश्वर ने उसे दूसरों को सिखाने के लिए सुसज्जित होने के लिए तैयार किया है। इस बात पर जोर दें कि आपके रिश्ते में बहुत समय की आवश्यकता होगी। आप सप्ताह में कम से कम तीन घंटे एक संरचित सेटिंग में एक साथ मिलेंगे। उसे लिखित कार्यों, स्मृति छंदों और नियमित बाइबल अध्ययन के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा। इस न्यूनतम समय प्रतिबद्धता पर पहले से सहमति होनी चाहिए। फिर, जैसे-जैसे वह परिपक्व होगा, सेवकाई में आपके साथ उसकी भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ेगी। उसे अपनी आध्यात्मिक वृद्धि को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में देखना चाहिए। साझा करें कि कैसे एक परिपक्व ईसाई के साथ आमने-सामने का रिश्ता गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान करेगा और उसकी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करेगा। चूंकि आप उस गति से प्रगति करेंगे जो उसके आध्यात्मिक विकास के प्रति संवेदनशील है, इसलिए वह ईसाई जीवन शैली की पूरी समझ प्राप्त करेगा।*

***रिश्ते की व्याख्या करें***

*एक अनुशासनात्मक संबंध का उद्देश्य एक ऐसे व्यक्ति को तैयार करना है जो दूसरों में मसीह जैसे चरित्र को पुन: उत्पन्न करने के*

*लिए खुद के लिए मर चुका है। अपने संभावित शिष्य को समझाएं कि प्रतिबद्धता और समर्पण के बिना, आपका संबंध एक अनुशासनात्मक संबंध नहीं है।*

***दायित्व।***
*उसे बताएं कि आपको एक-दूसरे के प्रति क्यों प्रतिबद्ध होना चाहिए। समझाएं कि पूर्व आपसी प्रतिबद्धता के बिना, आप संघर्ष के पहले संकेत पर हार मान सकते हैं या कमजोरी के संकेत से हतोत्साहित हो सकते हैं। नतीजतन, आप परमेश्वर के सामने उसके पुत्र की पूर्णता में विकसित होने के लिए एक साथ अनुबंध करते हैं, चाहे इसकी कीमत कुछ भी हो। प्रतिबद्धता का अर्थ है पीछे मुड़ना नहीं, कोई सीमा नहीं, कोई आरक्षण नहीं, कोई सीमा नहीं।*

*1975 में मैं सेंट लुइस से लॉस एंजिल्स के लिए उड़ान भर रहा था जब पायलट ने एक "गंभीर खतरे" की घोषणा की कि हमारी उड़ान में एक बम था। हमने एक आपातकालीन लैंडिंग की और हमें तुरंत खाली करने के लिए कहा गया। जब हमने दरवाजा खोला, तो एक पतली स्लाइड स्वचालित रूप से विमान से बाहर निकल गई और फूलने लगी। यह सीधे जमीन के समानांतर गोली मार दी। मैं एक पल के लिए झिझका, कूदने से डरता था, लेकिन अधिक डर नहीं था। स्लाइड के जमीन से टकराने से पहले, मैंने अपने शरीर को इस कमजोर निकास पर फेंक दिया। शब्द मेरे आतंक का वर्णन नहीं कर सकते! लेकिन जिस क्षण मैंने कूदा, मैं अपने निर्णय से बंधा हुआ था।*

*चूँकि परमेश्वर अटूट विश्वासयोग्यता की मांग करता है, इसलिए शिष्यत्व की प्रतिबद्धता उतनी ही बाध्यकारी है जितनी कि विमान से छलांग। अपने संभावित शिष्य से पुष्टि करें कि एक बार जब आप एक-दूसरे के प्रति यह प्रतिबद्धता बना लेते हैं, तो आप दोनों इसके लिए बाध्य होते हैं। उसे आश्वस्त करें कि ठोकर खाने पर भी आपकी प्रतिबद्धता दृढ़ रहेगी। समझाएं कि मसीह में उम्र में आने के लिए उसे आपके निर्देश को देखने, सुनने, उसका पालन करने और उसका जवाब देने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। एक-दूसरे के प्रति आपकी अनारक्षित प्रतिबद्धता आपके रिश्ते की नींव है।*

***जमा करना।***
*अपने संभावित शिष्य को बताएं कि उसे आपके प्रति समर्पण क्यों करना चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने उसे प्रजनन के लिए प्रशिक्षित करने का अधिकार दिया है। उसका समर्पण महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके बिना आप उस पर अधिकार का प्रयोग नहीं कर सकते। मसीह ने अपने शिष्यों को बुलाया, लेकिन इससे पहले कि वह उन्हें प्रशिक्षित करना शुरू कर सके, उन्हें उसका अनुसरण करना पड़ा। सुनिश्चित करें कि आपका रिश्ता स्पष्ट रूप से परिभाषित है और आपका संभावित शिष्य आपकी संबंधित भूमिकाओं को समझता है। उसे यह जानने की जरूरत है कि आप अपनी प्रतिबद्धता और चरित्र के कारण नेता हैं, न कि आपकी शिक्षा या कौशल के कारण। आपके नेताओं को उसे समझाना चाहिए कि उनके प्रति आपका सक्रिय समर्पण आपको नेतृत्व के लिए योग्य बनाता है। यह आपके रिश्ते को उचित पाठ्यक्रम पर लॉन्च करेगा और आपके अधिकार को स्थापित करने में मदद करेगा।*

*आपके संभावित शिष्य को आनंदमय समर्पण के प्रति प्रतिबद्धता बनानी चाहिए। इब्रानियों 13:17 कहता है, "अपने अगुवों की आज्ञा का पालन करो, और उनके अधीन रहो; क्योंकि वे तेरे प्राणों पर ऐसे पहरा देते हैं, जैसे लेखा देने वालों के रूप में। उन्हें इसे आनन्द से करने दें, दुःख के साथ नहीं, क्योंकि यह तुम्हारे लिए लाभहीन होगा। एक नेता आनंद का अनुभव कैसे कर सकता है यदि उसका शिष्य खुशी-खुशी उसके अधीन नहीं होता है? अपने भावी शिष्य के साथ साझा करें कि यह जानकर सुकून मिलता है कि आप परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं ताकि वह उसके ईसाई चलने में उसका मार्गदर्शन कर सके और उसकी भलाई पर नजर रख सके। किसी और चीज से अधिक, समर्पण का अर्थ है विश्वास। हाल ही में एक युवक जिसने हमारे मंत्रालय के माध्यम से नशीली दवाओं और अपराध से नाटकीय रूपांतरण का अनुभव किया था, उसे राष्ट्रीय टेलीविजन पर अपनी गवाही साझा करने का अवसर मिला। मैंने उसे उस समय ऐसा न करने की सलाह दी। परिस्थितियों ने मुझे अपनी सलाह के कारणों को उसे समझाने से रोका। मैंने बस उसे भरोसा करने के लिए कहा। यह मेरे लिए कितनी खुशी की बात थी जब वह समर्पण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण तुरंत सहमत हो गया। बाद में मैं उसके साथ गर्व के खतरे और समय से पहले सार्वजनिक प्रदर्शन से पहले उसके नए जीवन को "जीने" के महत्व को साझा करने में सक्षम था। अपने संभावित शिष्य को समझाएं कि उसका समर्पण परमेश्वर की इच्छा को खोजने में सुरक्षा प्रदान करता है क्योंकि उसके पास आपकी सलाह लेने का अवसर है। उसे आश्वस्त करें कि यदि आप उत्तर नहीं जानते हैं, तो आप अपने नेताओं से पूछेंगे और उन्हें केवल एक राय के बजाय एक आधिकारिक प्रतिक्रिया प्राप्त होगी। "... बहुत से सलाहकारों में सुरक्षा है" (नीतिवचन 24:6)।*



***चरण 6:*** *व्यक्तिगत प्रार्थना अनुरोधों को साझा करें फिर प्रत्येक व्यक्ति दूसरे के अनुरोधों के लिए प्रार्थना करता है।*

**स्रोत**: द मेकिंग ऑफ ए डिसाइपल डॉ . कीथ फिलिप्स द्वारा। फ्लेमिंग एच. रेवेल कंपनी द्वारा, 1981। आई°ऍस°बी°ऍन° 0-8007-1181-5. रॉबर्ट ई. कोलमैन द्वारा परिचय। सामग्री (अध्ययन प्रश्नों को छोड़कर) बिना किसी संशोधन के पुस्तक से ली गई है।

संशोधित 20261012